प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

जनजातीय महिलाओं को मिला मूल्यवर्धित उत्पाद निर्माण का प्रशिक्षण

पन्तनगर। 25 अप्रैल 2025। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वित्तीय सहयोग से पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि संचार विभाग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, काशीपुर के संयुक्त तत्वावधान में ब्लॉक सितारगंज के लौका गाँव में'उद्यमिता के अवसर सृजन हेतु चिप्स, पापड़, जैम, जेली, बड़ी, बेकरी उत्पाद, नमकीन निर्माण एवं उत्पाद विपणन' विषय पर दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस प्रशिक्षण का उद्देश्य जनजातीय समुदाय की महिलाओं को विभिन्न मूल्यवर्धित खाद्य उत्पादों के निर्माण की तकनीकी जानकारी प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर और उद्यमशील बनाना था। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं को चिप्स, पापड़, जैम, जेली, बड़ी, बेकरी उत्पाद एवं नमकीन निर्माण की व्यावहारिक जानकारी दी गई। साथ ही विपणन रणनीतियों एवं ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से इन उत्पादों की बिक्री कैसे की जाए, इस पर भी विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि अधिष्ठाता, छात्र कल्याण डा. ए.एस. जीना, परियोजना अन्वेषक एवं सहायक प्राध्यापिका, कृषि संचार विभाग डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल तथा श्रीमती वंदना श्रीवास्तव उपस्थित रहीं। इस अवसर पर डा. ए.एस. जीना ने प्रशिक्षण की सराहना करते हुए कहा कि महिलाएं अब मूल्यवर्धित खाद्य उत्पाद बनाकर उन्हें बाजार में बेच सकती हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे मौसमी उत्पादों को संरक्षित कर वर्षभर उपयोग में लाया जा सकता है। डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल ने बताया कि इस प्रशिक्षण का उद्देश्य महिलाओं को स्वरोजगार एवं उद्यमिता की दिशा में प्रेरित करना है। उन्होंने महिलाओं को ऑनलाइन मार्केटिंग, ब्रांडिंग और उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने की तकनीकों से अवगत कराया, ताकि वे स्थानीय स्तर पर ही उत्पाद बनाकर राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचा सकें। श्रीमती वंदना श्रीवास्तव ने महिलाओं को पापड़, चिप्स, नमकीन और बड़ी बनाने का लाइव डेमोंस्ट्रेशन दिया, जिससे महिलाओं को प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष देखने और समझने का अवसर मिला।

प्रशिक्षण के अंतर्गत महिलाओं को स्वरोजगार स्थापित करने हेतु आवश्यक कच्चे माल एवं उपकरण जैसे प्लास्टिक टब, कंटेनर, आटा, मैदा, चीनी, रिफाइंड तेल, उर्द की दाल और सूजी आदि वितरित किए गए। यह सामग्री महिलाओं को प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को तत्काल व्यवहार में लाने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रदान की गई। यह दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल महिलाओं के लिए तकनीकी सीख का माध्यम बना, बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सशक्त प्रेरणा भी प्रदान की। इस पहल से निश्चित रूप से महिलाएं स्वरोजगार एवं लघु उद्यमों की ओर अग्रसर होंगी, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिलेगी।

निदेशक संचार